आरती श्री नर्मदा जी की (३)

ॐ जय नर्मदा माता, मैया जय जग विख्याता ।
अमरकण्टक से विकसित, निर्मल जल दाता ।। ॐ जय...
पुण्य तपा है माता, तू पश्चिम गमनी ।
अपने जल से करती, तू पवित्र अवनी ।। ॐ जय...
जगत गुरु से पुति, रमणीय पुण्यथली ।
ममलेश्वर को सेवत, विपदा सफल टली ।। ॐ जय...
अति सौम्या अति रौद्रा, तू जल दायिनी मां ।
विध्यांचल की संगिन, सब सुख खानी मां ।। ॐ जय...
करत परिक्रमा तेरी, शंकर को ध्यावे ।
ऋद्धि - सिद्धि सुख सम्पत्ति, नित नूतन पावे ।। ॐ जय...
मात तुम्हारी आरती, भगत सदा गाते ।
मगन शरण में रहते, कष्ट नहीं पाते ।। ॐ जय...

विवरण

जय हे नर्मदा मइया ! आपकी ख्याति सारे जग में फैली हुई है, आप अत्यन्त कठिन रूप से चलकर आई हो तथा शुद्ध जल को देनेवाली हो । हमें धर्म के रास्ते पर चलने की सीख देती हो तथा आपकी लहरें पश्चिम की ओर जाती हैं । तुम अपने निर्मल जल से हमें पवित्र बना देती हो ।

आप अत्यन्त पवित्र हो तथा आपका धर्म स्थान बड़ा ही सुन्दर है । आप सौम्य एवं सुन्दर रूप भी धारण करती हो तथा रौद्र रूप भी धारण करती हो एवं हमें स्वच्छ जल प्रदान करने वाली हो । आप माता विंध्याचल की संगिनी हो एवं सभी सुखों को देनेवाली हो ।

आपकी हम परिक्रमा करते हुए भगवान शंकर का ध्यान लगाते हैं एवं धन - धान्य से परिपूर्ण होकर नित्य नये सुख को ही पाते हैं । हे माता

! आपकी आरती आपके भक्त गण हमेशा गाते रहते हैं तथा आपके आश्रय को पाकर प्रेममय हो जाते हैं तथा कभी भी दुःख नहीं पाते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.